This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४५-४६-४७-४८

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ४५ — वर्गांक श्राद्धविधी
नांव - पितृसूक्त
लेखक/लिपिकार .... पृष्ठ ५
काळ शके १८२५ — पूर्ण/~~अपूर्ण~~

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ४६ — वर्गांक श्राध्दोत्तरविधी.
नांव - शुद्धिमयूख
लेखक/लिपिकार काशीनाथ पाठक — पृष्ठ ६५
काळ शके १७६९ — पूर्ण/~~अपूर्ण~~

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ४७ — वर्गांक वेद
नांव - अर्घ्यप्रदानम् (यजुर्वेदोक्तम्)
लेखक/लिपिकार .... पृष्ठ १०
काळ संवत् १८७४. — पूर्ण/~~अपूर्ण~~

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ४८ — वर्गांक श्राद्धविधी
नांव - श्राद्धविधी
लेखक/लिपिकार .... पृष्ठ १०
काळ .... — पूर्ण/~~अपूर्ण~~

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीगणेशांबिकाभ्यां नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः
अथ यजुर्वेदोक्तहंसविधानेनार्घ्यप्रदानं लिख्यते ॥ आ
चम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रो
त्पन्नस्य अमुकशर्मणो यजमानस्य शरीरे वर्तमानवर्ति
ष्यमाणज्वरादिपीडा नानाभंगदर कुष्ठ प्रमेह श्वास
कासजलोदर गंडमाल क्षयरोग आह्निक चातुर्थिक
संग्रहणी वातपित्तकफादि नानारोगोपशांत्यर्थं अंगुष्ठा
दिरूप अर्घ्यदानं करिष्ये ॥ कृतसंकल्पः ॥ तत्र भूतशु
भूतशुद्धिमातृकापरिसंहारं प्राणप्रतिष्ठा अंतर्मातृ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

फ्रा बहिर्मातृका न्यासं च करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ मुरव्म
संकल्पं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ हंहूं सः शुचिषदितिमं
त्रस्य वामदेव ऋषिः ॥ अतिजगती छंदः ॥ श्री सूर्य पि
रमात्मा देवता ॥ ॐ ऋचा हृदत्रा खंडेन ततः षडं
खंडेन ततश्च तुर्धा खंडेन ततो ऽर्घ्येन ततः संपूर्ण
यः ऋचा ऽर्घ्यप्रदानमहं करिष्ये ॥ तिसंकल्पः ॥
ततो न्यासः ॥ तत्रादौ त्रि रेखादि पादांतः व्याहृतिप्र

र्वको ह्रां इत्यादि संपुटितश्च कार्यः ॥ स यथा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ ह्रां ॐ हंहूं सः ॐ ह्रां ॐ मित्राय नमः इति शिरखायै नमः ॥ एवं
सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं शुचिषत् ह्रीं ॐ रवये नमः ॥ इति शिरसे नमः
ॐ भूः ॰ ह्रं वसु ॐ ह्रं सूर्याय नमः इति ललाटे ॥ ॐ भूः ॰ ॐ ह्रैं
ॐ अंतरिक्षसत् ॐ ह्रैं ॐ भानवे नमः श्रोत्राभ्यां ॰ ॐ भूः ॰
ॐ ह्रौं होता ॐ ह्रौं ॐ खगाय नमः इति नेत्राभ्यां ॰ ॐ हः
ॐ वेदिषत् ॐ हः ॐ पूष्णे नमः इति नासिकायै नमः ॐ
भूः ॰ ॐ ह्रां ॐ अतिथि ॐ ह्रां ॐ हिरण्यगर्भाय नमः इति
मुखाय ॰ ॐ भूः ॰ ॐ ह्रीं ॐ दुरोणसत् ॐ ह्रीं ॐ मरीचये

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नमइतिकंठायनः ॐ भूः ॐ हुं ॐ त्वषतूॐ हुं ॐ आदि
सायनमइतिबाहुभ्यां ॐ भूः ॐ हैं ॐ वरसतूॐ हैं ॐ स
वित्रे पाणिभ्यां ॐ भूः ॐ हौं श्रीं ऋतसतूॐ हौं ॐ अ
र्काय हृदयाय ॐ भूः ॐ हः ॐ व्योमसतूॐ हः ॐ भा
२ स्कराय उदराय ॐ भूः ॐ हां अब्जाॐ हां ॐ मित्राय २
नाभ्यै ॐ भूः ॐ हीं ॐ गोजाॐ हीं रवये नः कट्यै नः
ॐ भूः ॐ हुं ॐ ऋतजाॐ हुं सूर्याय ऊरुभ्यां १५ ॐ
भूः ॐ हैं अद्रिजाॐ हैं ॐ भानवे जानुभ्यां १६ ॐ भूः ॐ
हौं ॐ ऋतं ॐ हौं ॐ खगाय गुल्फाभ्यां १७ ॐ भूः ॐ हः

ॐ बृहत्ॐ हः ॐ पूष्णेनमः पादाभ्यां १८॥ अथषडंगन्यासः
ॐ भूः ॐ हां ॐ हंसः शुचिषत्ॐ हां मित्ररविभ्यांनमइतिअं
गुष्ठाभ्यां १ ॐ भूः ॐ हीं ॐ वसुरन्तरिक्षसत्ॐ हीं ॐ सूर्य
भानुभ्यां तर्जनीभ्यां २ ॐ भूः ॐ हुं ॐ होतावेदिषत्ॐ हुं
ॐ खगपूषाभ्यां मध्यमाभ्यां ३ ॐ भूः ॐ हैं ॐ अतिथिर्दुरो
णसत्ॐ हैं ॐ हिरण्यगर्भमरीचीभ्यां अनामिकाभ्यां
ॐ भूः ॐ हौं ॐ नृषद्वरसत्ॐ हौं ॐ आदित्यसवितृभ्यां
कनिष्ठिकाभ्यां ५ ॐ भूः ॐ हः ॐ अब्जागोजा ऋतजा
अद्रिजा ऋतं बृहत्ॐ हः ॐ अर्कभास्कराभ्यां करतल

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

करपृष्ठाभ्यां॰ ६।। ॐ भूः॰ ॐ ह्रां ॐ हंसः शुचिषत् ॐ ह्रां ॐ मि
त्ररविभ्यां॰ हृदयाय॰ १ ॐ भूः ॐ ह्रीं ॐ वसुरन्तरिक्षसत् ॐ
ह्रीं ॐ सूर्यभानुभ्यां॰ शिरसे स्वाहा २ ॐ भूः ॐ ह्रूं ॐ होतावे
दिषत् ॐ ह्रूं ॐ खगपूषाभ्यां॰ शिखायै वषट् ॐ भूः ॐ ह्रैं ॐ
अतिथिर्दुरोणसत् ॐ ह्रैं ॐ हिरण्यगर्भमरीचीभ्यां॰ कव
२ चाय हुं ॐ ह्रौं ॐ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसत् ॐ ह्रौं ॐ आदि २
त्यसवितृभ्यां॰ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ भूः ॐ ह्रः अब्जा गो
जा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॐ ह्रः ॐ अर्कभास्कराभ्यां॰
अस्त्राय फट् ।। ६ ।। ततो मूर्धादिपादपादांतो नामन्यासः ॐ

अर्काय॰ मूर्ध्नि ।। ॐ रवये॰ ललाटे ॐ सूर्याय॰ नेत्रयोः ॐ
दिवाकराय॰ कर्णयोः ॐ भानवे न॰ नासिकयोः ॐ भास्करा
य नमः मुखे ॐ पर्जन्याय॰ ओष्ठयोः ॐ तीक्ष्णाय॰ जिह्वायां ।।
ॐ सुवर्णरेतसे न॰ कंठे ॐ तिग्मतेजसे॰ स्कंधयोः ॐ पूष्णे॰
बाह्वोः ॐ मित्राय॰ पृष्ठे ॐ वरुणाय॰ दक्षिणहस्ते ॐ त्व
ष्ट्रे न॰ वामहस्ते ॐ उष्णकराय॰ हस्तयोः ॐ भानुमते न॰ हृदि
ॐ यमाय॰ उदरे ॐ आदित्याय॰ नाभिमूले ॐ हंसाय॰
कट्यां ॐ रुद्राय॰ ऊर्वोः ॐ गोपतये॰ जान्वोः ॐ सवित्रे॰
जंघयोः ॐ विवस्वते न॰ पादयोः ॐ दिवाकराय॰ गुल्फयोः ।।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नमो ध्वंसाय॰ बाह्यतः ॐ भगाय॰ अभ्यंतः ॐ सहस्रांशवे॰
सर्वांगेषु ॐ भगाय॰ दिग्विदीक्षु ॥ अथ ध्यानं ॥ तप्तकांच
नवर्णाभं तेजोराशिं दिवाकरं ॥ सप्ताश्वरथसंयुक्तं अरूले
नश्रियासह ॥१॥ एकेननिमिषार्धेन क्रममाणांतरालयोः ॥
किरीटिनं पद्मनेत्रं पद्मरागविभूषितं ॥२॥ दिवाकरं सहस्रा
४ संभ्रमातीतं समुद्भवं ॥ लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यं वैचिं ४
तयाम्यहं ॥३॥ ग्रहराजं चतुर्बाहुं संपूज्य आत्मजानयेत् ॥
हे हे सूर्य त्वमे देहि वरदो भव सर्वदा ॥४॥ इत्यात्मानं आ
राध्य ॥ ॐ आत्मने नमः इति पंचोपचारैः पूजनं ॥ आत्म

ने नमस्तेस्तु नमस्ते परमात्मने ॥ जीवात्मनेनमस्तेस्तु
नमस्ते जगदात्मने ॥ इत्यंतर्यागः ॥ अथ पीठपूजनं ॥ एत
च्चित्तस्थिरो भूत्वा पूजयेद्देवताश्च वै ॥ उपहारास्समा
हृत्य संपसेनमंडलं दक्षिणे ॥५॥ सुपुत्रसौर गामात्र्योत
द्भिरर्घं स्वकारणं ॥ तेनार्घ्यवारिणा कार्यं पूजाकर्मसमा
रभेत् ॥ सूर्यगायत्रीं जप्त्वा ॥ भास्करायविद्महे दिवाक
राय धीमहि ॥ तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ॥ जपी त्वास्वासने ॥
ॐ आधारशक्त्येनमः ॐ अनंताय॰ ॐ सूर्याय॰ ॐ ब्र
ह्मणे॰ ततः पीठमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य ॥ आवाहनादिकुर्यात् ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ॐ सूर्याय॰ आयातनं स॰ इत्यादि संपूज्य॥ ततः परिवारा
न्पूजयेत्॥ तत्रादौ कूलशाराधनं॥ भूरसीति भूमिं पूजयेत्॥
धान्यमसीति धान्यं॥ स्थिरो भवेति स्थिरकरणं॥ कल
शं स्थापयेत्॥ जलेन पूरयेत्॥ हंसऋचा त्रिवारं अभिमं
त्र्य पंचोपचारैः पूजयेत्॥ ततः परिवारान्पूजयेत्॥ ॐ अ
नंताय॰ शेषाय॰ ॐ कूर्माय॰ ॐ सूकराय॰ ॐ भूरादिस
५ कललोकेभ्यो॰ ॐ अग्निमंडलाय॰ ॐ सोममंडलाय॰ ५
ॐ सूर्यमंडलाय॰ ॐ रुद्राय॰ ॐ विष्णवे॰ ॐ ब्रह्मणे॰
ॐ शक्तये॰ ॐ समुद्रेभ्यो॰ ॐ द्वीपेभ्यो॰ पर्वतेभ्यो॰ मरु

भ्यो॰ ॐ गणेभ्यो॰ ॐ वसुभ्यो॰ ॐ अश्विभ्यो॰ ॐ नागेभ्यो॰ ॐ
सरिभ्यो॰ अप्सरेभ्यो॰ ततः यंत्रं पूजयेत्॥ प्रणवादिक्रमेण॥
ॐ मार्तंडाय॰ ॐ भानवे॰ ॐ आदित्याय॰ ॐ हंसाय॰ ॐ सू
र्याय॰ ॐ दिवाकराय॰ ॐ तपनाय॰ ॐ भास्कराय॰ ॐ भासा
दीपाय॰ इति प्रथमावरणं॥ ॐ तप्तायै॰ ॐ सूक्ष्मायै॰ ॐ ज
यायै॰ ॐ भाद्रायै॰ ॐ विभूत्यै॰ विमलायै॰ ॐ अमोघायै॰
ॐ विद्युतायै॰ ततो मध्ये॥ ॐ श्रियै॰ ॐ सर्वतोमुखेन॰
इति द्वितीयावरणं॥ ॐ आदित्याय॰ ॐ सवित्रेन॰ ॐ सू
र्याय॰ ॐ खगाय॰ ॐ पूष्णेन॰ ॐ गभस्तये॰ ॐ मार्तंडाय॰

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

आग च्छ्रुषेन॰ इति तृतीयावरणं॥ ॐ ब्राह्म्यै॰ माहेश्व
र्यै॰ ॐ कौमार्यै॰ ॐ वैष्णव्यै॰ वाराहेन॰ ॐ इंद्राण्यै॰ ॐ
चामुंडायै॰ ॐ चंडिकायै॰ इति च॰ ॐ आराध्याय॰ ॐ
कपिलाय॰ ॐ साराय॰ ॐ प्रभूताय॰ ॐ दंडिने॰ ॐ
६ पिंगलाय॰ ॐ धात्रे॰ ॐ विधात्रे॰ इति पंचमा॰ ॐ ऐरा
वताय॰ ॐ पुंडरीकाय॰ ॐ वामनाय॰ ॐ कुमुदाय॰ ॐ ६
अंजनाय॰ ॐ पुष्पदंताय॰ सर्वा मेप्रसूतिकाभ्या॰ इति
षष्ठमावरणं॥ ॐ सूर्याय॰ ॐ रवये॰ ॐ विवस्वतेन॰
ॐ भगाय॰ ॐ वरुणाय॰ ॐ आदित्याय॰ ॐ विष्णवेन॰ इति
सप्तमा॰

ॐ असितांगभैरवाय॰ ॐ रुरुभैरवाय॰ ॐ चंडभैरवाय॰
ॐ क्रोधभैरवाय॰ ॐ उन्मत्तभैरवाय॰ ॐ कपिलभैरवा
य॰ ॐ भीषणभैरवाय॰ संहारभैरवाय॰ इ॰ अष्टमा॰॥
ॐ सूर्याय॰ ॐ चंद्राय॰ भौमाय॰ बुधाय॰ बृहस्पतये॰
शुक्राय॰ शनैश्चराय॰ राहवे॰ केतुभ्यो॰ ॐ मध्येसूर्याय॰
इति नवमा॰ ॐ इंद्राय॰ ॐ अग्नये॰ ॐ यमाय॰ नैर्ऋत्यै॰
ॐ वरुणाय॰ ॐ वायवे॰ सोमाय॰ ॐ ईशानाय॰ इति दश॰
ॐ मित्राय॰ ॐ रवये॰ ॐ सूर्याय॰ ॐ भानवे॰ ॐ खगाय॰
ॐ पूष्णे॰ हिरण्यगर्भाय॰ ॐ मरीचये॰ ॐ आदित्याय॰
ॐ सवित्रेन॰ ॐ अर्काय॰ ॐ भास्कराय॰ इति एकादशावर्णं

ॐ अरुणाय॰ ॐ सूर्याय॰ ॐ वेदांगाय॰ ॐ भानवेन॰ ॐ इं
द्राय॰ ॐ रवये॰ गभस्तये॰ ॐ यमाय॰ ॐ सुवर्णरेतसेन॰
ॐ दिवाकराय॰ ॐ ईशानाय॰ ॐ विष्णवे॰ इति द्वादशावरणं॥
ततश्चतुरस्रांतभूतग्रहात्॥ पूर्वे॥ दुं दुर्गायै॰ दक्षिणे गं
गणपतये॰ पश्चिमे वं वरुणाय॰ उत्तरे ईं ईशानाय॰ इ
ति यंत्रं धृत्वा अर्चयेत्॥ ॐ सूर्याय॰ इति सूर्यं प्रदक्षिणी
कृत्स॥ नमस्तेस्तु प्रार्थयेत्॥ ॐ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णु
7 रूपाय ते नमः॥ विश्वरूपाय देवाय नमस्तस्मै नमो नमः 7
कालात्मा सर्वभूतात्मा विघात्मा विश्वतोमुखः॥ जन्म
मृत्यु जरा व्याधि संसार भयनाशनः॥ दारिद्र्यव्य

सनध्वंसि श्रीमान्पातु दिवाकरः॥ इति प्रार्थना॥ अथांगपूजा॥
ॐ आदित्याय॰ पादौ पूजयामि॥ ॐ सवित्रे॰ जानुनि पू॰ ॐ
सूर्याय॰ उरुं॰ गभस्तये॰ हृदयं ॐ मार्तंडाय॰ कंठं॰ ॐ ज
गच्चक्षुषे॰ मुखं॰ ॐ सूर्याय॰ घ्राणं॰ ॐ रवये॰ नेत्रं॰ ॐ
विवस्वते॰ श्रोत्रं॰ ॐ सर्वेश्वराय॰ शिरः पूज॰ अथार्घ्यदा
नं कुर्यात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ह्रां ॐ हंसः शुचिषत् ॐ ह्रीं
ॐ मित्राय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि॥ ॐ भूर्भु॰ ॐ ह्रीं ॐ
वसुरन्तरिक्षसत् ॐ ह्रीं ॐ रवयेन॰ २ ॐ भू॰ ॐ हुं ॐ होता
वेदिषत् ॐ हुं ॐ सूर्याय॰ इदमर्घ्यंस॰ ३ ॐ भू॰ ॐ ह्रैं ॐ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अतिथिर्दुरोणसत् ॐ ह्रैं ॐ भानवेन॰ इ॰ अ॰ ४ ॐ भू॰ ॐ ह्रौं ॐ
न्नषत् ॐ ह्रौं ॐ खगाय॰ इदमर्घं॰ ५ ॐ भू॰ ॐ ह्र ॐ वरसत् ॐ
ह्रः ॐ पूष्णे॰ इदम॰ ६ ॐ भू॰ ॐ ह्रां ॐ ऋतसत् ॐ ह्रां ॐ हि
रण्यगर्भाय॰ इदम॰ ७ ॐ भू॰ ह्रीं ॐ व्योमसत् ॐ ह्रीं ॐ म
रीचये॰ इदम॰ ८ ॐ भू॰ ॐ ह्रुं ॐ अब्जागोजा ॐ ह्रुं ॐ आ
दित्याय॰ इदम॰ ९ ॐ भू॰ ॐ ह्रैं ऋतजा अद्रिजा ॐ ह्रैं स
८ वित्रेन॰ इदम॰ १० ॐ भू॰ ॐ ह्रौं ॐ ऋतं ॐ ह्रौं अर्काय॰ ८
इदम॰ ११ ॐ भू॰ ॐ ह्रः ॐ बृहत् ॐ ह्रः ॐ भास्कराय॰ इदम॰ १२
ॐ भू॰ ॐ ह्रां ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसत् ॐ ह्रां ॐ

मित्ररविभ्या॰ इदम॰ १३ ॐ भू॰ ॐ ह्रीं ॐ होतावेदिषदतिथिर्दु
रोणसत् ॐ ह्रीं ॐ सूर्यभानुभ्या॰ इदम॰ १४ ॐ भू॰ ॐ ह्रुं ॐ न
षद्वरसत् ॐ ह्रुं ॐ खगपूषाभ्यां॰ इदम॰ १५ ॐ भू॰ ॐ ह्रैं ॐ
ऋतसद्व्योमसत् ॐ हिरण्यगर्भमरीचीभ्या॰ इदम॰ १६
ॐ भू॰ ॐ ह्रौं ॐ अब्जागोजाऋतजा अद्रिजा ॐ ह्रौं ॐ आ
दित्यसवितृभ्यां॰ इदम॰ १७ ॐ भू॰ ॐ ह्रः ॐ ऋतंबृहत्
ॐ ह्रः ॐ अर्कभास्कराभ्यां॰ इदम॰ १८ ॐ भू॰ ॐ ह्रां ह्री
ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसत् ॐ ह्रां ह्रीं ॐ मित्रर
विसूर्येभ्यो॰ इदम॰ १९ ॐ भू॰ ॐ ह्रुं ह्रैं ॐ होतावेदिषद

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्तिथिर्दुरोणसत्॥ॐ कुं हैं ॐ भानुरवगपूषाभ्यो॰ इदं अ॰२०
ॐ भू॰ ॐ हौं नृषद्वरसदृतसद्व्योमसत्॥ ॐ हौं ॐ हिरण्य
गर्भ मरीच्यादितिभ्यो॰ इदम॰२१ ॐ भू॰ ॐ हः ॐ अब्जा
गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ ॐ हः सवित्र्यर्कभास्क
रेभ्यो॰ इदम॰२२॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्त
रिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं
ॐ मित्ररविखगपूषाभ्यो॰ इदम॰२२ ॐ भू॰ हैं हौं हः
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं
बृहत्॥ ॐ हैं हौं ह्रः ॐ हिरण्यगर्भ मरीच्यादित्यस

वित्र्यर्कभास्करेभ्यो॰ इदम॰२४ ॐ भू॰ ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं हौं
हः ॐ हंसः शु॰ ऋतं बृहत्॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं हौं हः ॐ
ॐ मित्ररविसूर्यभानुखगपूषहिरण्यगर्भमरीच्यादित्य
सवित्र्यर्कभास्करेभ्यो॰ इदं अर्घ्यं समर्पयामि॥२५॥ततः
स्तर्घपंचोपचारैः संपूज्य॥ विभ्राडित्यनुवाकेन स्तुतिः५
अर्कास्ते वेदनयनैः ऋचा समन्वाचक्षिरस्ते वेदनयनेत्रा
कण्वउक्ता॥ अं नूनं स्ते वेदनयनैर्लघुए वउक्तोल व्यर्घ
वेदनयनेन महार्घकः स्यात्॥ पञ्चाष्टदलं हैचो

कर्णिकाके सरे युतं॥ संदत्वावरणसंयुतं ह्यादरे शाननो
द्भयं॥२॥ इति पद्मवेदोक्त अर्घ्यप्रदानार्थं हंसविधानः
समाप्तः॥ शुभं भवतु॥ बिंदुत्रिकोणषट्कोणवसुद्वाद
शमेव च॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारं सूर्ययंत्रं प्रपूजयेत्॥
अष्टदलेया च चौयंत्रं प्रपूजयेत्॥५॥ श्रीसूर्यना
७ रायणाय नमः॥ शुभं भवतु॥ संवत् १८ ७४ मि ७
ति आषाढ वद्य ८॥ —पा. वा. हस्ताक्षर आपाग॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=03.08.19 11:10
,TRANSFERRED=2019/08/03 at 11:14:06
,PAGES=12
,TYPE=STD
,NAME=S0001265
,Book Name=M-47-ADHAYPRADANAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection